

भारत की आत्मा-धर्म

स्वामी विवेकानंद

प्रत्येक राष्ट्र का लक्ष्य विधाता के द्वारा पूर्व निर्धारित है। प्रत्येक राष्ट्र के पास संसार को देने के लिए कोई न कोई संदेश है। प्रत्येक राष्ट्र को किसी विशेष संकल्प की पूर्ति करनी है। अतः प्रारम्भ में ही हमें अपनी जाति के जीवन-लक्ष्य को समझ लेना होगा। उसे कौन-सा देवी लक्ष्य पूर्ण करना है, विभिन्न राष्ट्रों के अभियान में उसे कहां और कौन सा स्थान ग्रहण करना है, जातियों के सम्मिलित संगीत में उसे कौन सा स्वर मिलाना है ?

हम हिन्दू हैं

हम लोग हिन्दू हैं। मैं 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग किसी बुरे अर्थ में नहीं कर रहा हूँ और न मैं उन लोगों से सहमत हूँ, जो समझते हैं कि इस शब्द के कोई बुरे अर्थ हैं। प्राचीन काल में इस शब्द का अर्थ केवल इतना था- "सिन्धु तट के इस ओर बसने वाले लोग।" आज भले ही हमसे घृणा रखने वाले अनेक लोग इस शब्द पर कुत्सित अर्थ आरोपित करना चाहते हों, पर केवल नाम में क्या धरा है ? यह तो हम पर निर्भर करता है कि 'हिन्दू' नाम ऐसी प्रत्येक वस्तु का द्योतक हो जो महिमामय है, आध्यात्मिक है अथवा वह केवल कलंकित, पददलित, निकम्मी और धर्म-भ्रष्ट जाति का प्रतीक है। यदि आज 'हिन्दू' शब्द का कोई बुरा अर्थ लगाया जाता है, तो उसकी परवाह मत करो। आओ ! हम सब अपने आचरण से संसार को यह दिखा दें कि संसार को कोई भी भाषा इससे महान् शब्द का आविष्कार नहीं कर पायी है।

मेरे जीवन का यह सिद्धांत रहा है कि मुझे अपने पूर्वजों को अपनाने में कभी लज्जा नहीं आयी। मैं सबसे गर्वीले मनुष्यों में से एक हूँ। किन्तु मैं तुम्हें स्पष्ट रूप में बता दूँ यह गर्व मुझे अपने कारण नहीं अपितु अपने पूर्वजों के कारण है। अतीत का मैंने जितना ही अध्ययन किया है, जितनी ही मैंने भूत काल पर दृष्टि डाली है, यह गर्व मुझमें उतना ही बढ़ता गया है। उसने मुझे साहस पूर्ण निष्ठा और शक्ति प्रदान की है। उसने मुझे धरती की धूल से उठाकर ऊपर खड़ा कर दिया और अपने महान् पूर्वजों के द्वारा निर्धारित उस महायोजना को पूर्ण करने में जुटा दिया। उन प्राचीन आर्यों की संतानो ! भगवत्कृपा से तुम भी उस गर्व से परिपूर्ण हो जाओ। तुम्हारे रक्त में भी अपने पूर्वजों के लिये उसी श्रद्धा का संचार हो जाय ! यह तुम्हारे रग-रग में व्याप्त हो जाये और तुम संसार के उद्धार के लिये सचेष्ट हो जाओ।

प्रत्येक राष्ट्र का एक दैवी लक्ष्य

जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य का एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है, उसी प्रकार राष्ट्रीय व्यक्तित्व भी होता है। जैसे एक व्यक्ति कुछ विशिष्ट बातों में, कुछ विशिष्ट लक्षणों में अन्य व्यक्तियों से भिन्न होता है, उसी प्रकार एक जाति अपनी कुछ विशिष्टताओं के कारण अन्य जातियों से भिन्न होती है और जिस प्रकार प्रकृति की योजना में किसी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति करना ही प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य होता है, जिस प्रकार उसके अपने पिछले कर्मों द्वारा उसकी भावी दिशा निर्धारित हो जाती है, ठीक ऐसा ही राष्ट्रों के साथ होता है। प्रत्येक राष्ट्र को एक पूर्व निर्धारित लक्ष्य को पूर्ण

करना है। प्रत्येक राष्ट्र को एक विशेष संदेश देना है। प्रत्येक राष्ट्र को किसी व्रत विशेष का उद्घाटन कराना है। अतः प्रारम्भ से ही हमें अपनी जाति व्रत को, उसके पूर्व निर्धारित लक्ष्य को समझ लेना होगा। उसे राष्ट्रों की पंक्ति में कौन सा स्थान ग्रहण करना है ? विभिन्न जातियों के सम्मिलित संगीत में कौन सा स्वर मिलाना है।

राष्ट्रीय आत्मा

अपने देश में बचपन में हम किस्से सुना करते थे कि कुछ सर्पों के फन में मणि होती है। और जब तक मणि वहाँ है उसे किसी भी उपाय से नहीं मारा जा सकता। हमने कहानियों में ऐसे दैत्यों-दानवों के बारे में भी सुना है, जिनके प्राण किन्हीं छोटी-छोटी चिड़ियों में बसे होते हैं। और जब तक वे चिड़ियां सुरक्षित हैं, कोई भी शक्ति उन दैत्यों का संहार नहीं कर सकती - चाहे तुम उनके टुकड़े-टुकड़े ही क्यों न कर डालो, या कुछ भी करो वे दैत्य नहीं मर सकते। यही बात राष्ट्रों के बारे में भी सत्य है। प्रत्येक राष्ट्र के प्राण भी किसी बिन्दु-विशेष में केंद्रित रहते हैं। वहाँ उस राष्ट्र का राष्ट्रीयत्व बसता है और जब तक उस मर्म स्थान पर आघात नहीं होता तब तक वह राष्ट्र नहीं मर सकता।

इसके अतिरिक्त एक अन्य बात भी आप देखेंगे कि यदि किसी राष्ट्र के केवल ऐसे अधिकारों का अपहरण किया जाय, जिनका उसके राष्ट्रीय उद्देश्य से गहरा सम्बन्ध नहीं है, यदि ऐसे सब अधिकार भी छीन लिये जाएँ तो भी उस राष्ट्र को बहुत अधिक असन्तोष न होगा। किन्तु जब उस मूलभूत उद्देश्य पर, जिस पर राष्ट्रीय जीवन का सम्पूर्ण महल टिका है, छोटा आघात भी होगा तो वह राष्ट्र प्रचण्ड शक्ति से उसका प्रतिरोध करेगा।

फ्रांसीसी और अंग्रेज चारित्र्य

उदाहरणार्थ, उन तीन वर्तमान जातियों की तुलना कीजिए, जिनका थोड़ा बहुत इतिहास आप जानते हैं। ये राष्ट्र हैं फ्रांसीसी, अंग्रेज एवं हिन्दू। फ्रांस के राष्ट्रीय चरित्र का मेरुदण्ड राजनीतिक अधिकार स्वातन्त्र्य है। वहाँ की प्रजा सभी अत्याचारों को शान्त भाव से सहन करती है। उसे करों के भार से पीस डालिये, तो भी वह चूँ तक नहीं करेगी। सम्पूर्ण राष्ट्र को सेना में भर्ती होने के लिए बाध्य कर दीजिये तो भी वे शिकायत नहीं करेंगे। किन्तु जिस क्षण कोई उसके राजनीतिक अधिकार-स्वातन्त्र्य के ऊपर हाथ डालेगा, तब सम्पूर्ण राष्ट्र एक होकर खड़ा हो जायेगा और पागलों की भाँति उसका प्रतिकार करेगा। फ्रांसीसी चारित्र्य का मूल सिद्धान्त है, 'कोई व्यक्ति हमारे ऊपर बलपूर्वक शासन नहीं कर सकता—गरीब-अमीर, विद्वान अपढ़, उच्च कुल अथवा निम्न वर्ग—सभी का हमारे देश की सरकार तथा हमारे समाज के स्वतन्त्र नियंत्रण में समान अधिकार है। जो हमारे इस अधिकार-स्वातन्त्र्य में हस्तक्षेप करना चाहेगा, उसे उसका दण्ड भोगना होगा।

अंग्रेजों के चारित्र्य में आदान-प्रदान पर आधारित व्यवसाय बुद्धि की प्रधानता है। अंग्रेज के लिए सबसे आवश्यक वस्तु है—समान भाव एवं सुविधाओं तथा अधिकारों का समान वितरण। अंग्रेज लोग राजा की महत्ता तथा सामन्त वर्ग के विशेषाधिकारों को नतमस्तक होकर स्वीकार कर लेते हैं। किन्तु यदि उसे अपनी गाँठ से एक छोटा सिक्का भी देना पड़ जाय तो वह पहले उसका हिसाब मांगता है। राजा है तो अच्छी बात, उसका वे लोग आदर करेंगे और उसकी आज्ञाओं का पालन करने को भी तत्पर रहेंगे, किन्तु यदि राजा भी पैसा मांगे तो अंग्रेज कहेगा "ठीक है, किन्तु पहले यह समझाओ कि पैसा क्यों चाहिये, इससे क्या भला होने वाला है ? फिर मुझे 'उसको कैसे खर्च किया जाय' इस बारे में मत व्यक्त करने का अधिकार दो तब कहीं मैं पैसा दूँगा।" एक बार एक अंग्रेज

राजा ने अंग्रेज जाति से बलपूर्वक धन वसूलने के प्रयास में ही अपने विरुद्ध महान् क्रान्ति को आमंत्रित कर लिया था। उन्होंने उस राजा को मार डाला।

हिंदू चारित्र्य

हिन्दू कहते हैं कि राजनैतिक और सामाजिक अधिकार-स्वातन्त्र्य बहुत अच्छी वस्तु है, परन्तु वास्तविक वस्तु है व्यक्ति को मुक्तिमार्ग पर बढ़ने के लिए पूर्ण अध्यात्मिक स्वतन्त्रता। यही है हमारा राष्ट्रीय उद्देश्य-तुम चाहे वैदिक, जैन या बौद्ध, चाहे अद्वैत, विशिष्टाद्वैत अथवा द्वैत - किसी भी 'मत' को टटोल लो, ये सभी इस उद्देश्य पर एक हैं। इसको न छोड़ो और चाहे जो करो, हिन्दू तनिक भी ध्यान नहीं देगा और चुप रहेगा। किन्तु यदि कहीं तुमने इस मर्मस्थल को छेड़ दिया, तो सावधान ! तुम सर्वनाश को निमन्त्रण दे दोगे। उसका सर्वस्व छीन लो, उसे ठोकर मारो, उसे चाहे काला आदमी कहो चाहे और कोई गन्दा नाम दो, वह तनिक भी परवाह नहीं करेगा, पर केवल उसके धर्म के द्वार को खुला और अक्षुण्ण छोड़ दो। यहीं देखो, आधुनिक काल में कितने पठान वंश आये और चले गये, किन्तु वे भारत में अपने साम्राज्य की जड़ें नहीं जमा सके क्योंकि वे लगातार हिन्दुओं के धर्म पर आघात करते रहे। किन्तु उसके विपरीत मुगल साम्राज्य कितना सुदृढ़ और प्रचण्ड सामर्थ्यसम्पन्न बन सका। क्यों ? क्योंकि मुगलों ने उस मर्मस्थल को नहीं छेड़ा। वास्तव में हिन्दू ही मुगल साम्राज्य के मुख्य स्तम्भ बन गये।

हमने देखा है कि हमारा धर्म ही हमारे तेज, हमारे बल, इतना ही नहीं तो हमारे राष्ट्रीय-जीवन का भी मूलाधार है। इस समय में इस तर्क-वितर्क में नहीं पड़ना चाहता कि धर्म में यह केन्द्रीयकरण उचित है या नहीं, सही है या गलत, अथवा कालान्तर में लाभप्रद है या नहीं। किन्तु अच्छा हो या बुरा, यही वस्तुस्थिति है। अब तुम इससे पीछा नहीं छोड़ा सकते। सदा-सर्वदा के लिए तुम इससे बंध चुके हो और तुम्हें इसके सहारे ही खड़ा रहना होगा, भले ही धर्म में तुम्हारी मेरे जितनी निष्ठा न हो। तुम इसी धर्म से बंधे हुए हो और यदि तुम इसे छोड़ दोगे तो तुम चूर-चूर हो जाओगे। यही हमारी जाति का प्राण है और तुम्हें उसे ही पुष्ट करना होगा।

सोमनाथ से शिक्षा लो

तुम जो युगों तक धक्के सहकर भी अक्षय हो, इसका कारण केवल यही है कि धर्म के लिये तुमने बहुत कुछ प्रयत्न किया था, उसके लिए अन्य सब कुछ निछावर कर दिया था। तुम्हारे पूर्वजों ने धर्म-रक्षा के लिए सब कुछ साहसपूर्वक सहन किया था, यहाँ तक कि मृत्यु को भी गले लगाया था। विदेशी विजेताओं ने मन्दिर के बाद मन्दिर तोड़े, किन्तु जैसे ही वह आंधी गुजरी, मन्दिर का शिखर पुनः खड़ा हो गया। दक्षिण भारत के ऐसे कुछ प्राचीन मन्दिर विशेष कर गुजरात का सोमनाथ मन्दिर तुम्हें अक्षय ज्ञान प्रदान करेंगे। जाति के इतिहास के प्रति जिस गहरी दृष्टि को वे प्रदान करते हैं, वह ढेरों पुस्तकों से नहीं मिल सकती। ध्यान से देखो—इन मन्दिरों पर सैकड़ों आक्रमणों एवं सैकड़ों पुनरुत्थानों के चिह्न किस तरह अंकित हैं ? वे बार-बार नष्ट हुए और खंडहरों में से पुनः पुनः उठ खड़े हुए- पहले की ही भांति सशक्त एवं नवजीवनयुक्त। यही है हमारा राष्ट्रीय मानस, यही है हमारा राष्ट्रीय जीवन-प्रवाह। इसका अनुसरण करो और गौरव प्राप्त करो। इसे त्याग दोगे तो मृत्यु निश्चित है। जिस क्षण तुम इस जीवन प्रवाह से बाहर कदम उठाओगे मृत्यु एवं पूर्ण-विनाश ही अवश्यम्भावी परिणाम होगा। मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं कि अन्य बातें पूर्णतया अनावश्यक हैं। मेरा यह भी कहना नहीं है कि राजनीतिक अथवा सामाजिक सुधारों की कोई आवश्यकता ही

नहीं है। मेरा तात्पर्य केवल इतना है-और मैं इसे तुम्हारे मस्तिष्क पर स्थायी रूप से अंकित कर देना चाहता हूँ कि यहां धर्म ही मुख्य आवश्यकता है, अन्य सब चीजें गौण हैं।

सहस्रों शताब्दियों में विकसित चारित्र्य

अब तुम स्पष्टतया समझ गये होंगे कि इस राष्ट्र का प्राण कहां है। वह धर्म में है। कोई उसको नष्ट नहीं कर पाया, इसलिए हिन्दू जाति इतनी आपत्ति-विपत्तियों को सह कर भी आज जीवित है। एक भारतीय विद्वान ने पूछा, "राष्ट्र के प्राणों को धर्म में बनाये रखने की ही क्या आवश्यकता है? क्यों न अन्य राष्ट्रों के समान अपने राष्ट्र के प्राणों को भी राजनीतिक या सामाजिक स्वाधीनता में रखा जाय?" यह बात कहने में ही सरल है।

यदि केवल तर्क के लिए ही यह मान लें कि धर्म और अध्यात्मिक स्वाधीनता, आत्मा, परमात्मा और मुक्ति आदि सब मिथ्या बातें हैं, तो क्या होगा, इस पर विचार कीजिए। जिस प्रकार एक अग्नि स्वयं को अनेक रूपों में प्रकाशित करती है, उसी प्रकार एक महाशक्ति फ्रांसीसियों में राजनीतिक अधिकार-स्वातन्त्र्य का रूप लेकर, अंग्रेजों में वाणिज्य बुद्धि एवं समभाव के विस्तार के रूप में तथा हिन्दुओं में अध्यात्मिक स्वाधीनता अथवा मुक्ति का रूप लेकर स्वयं को प्रकाशित कर रही है। और ध्यान दो, उस महाशक्ति की प्रेरणा से ही कई शताब्दियों में अनेक प्रकार के सुख-दुःखों से गुजर कर फ्रांसीसी और अंग्रेज जाति का चरित्र गठन हुआ है और उसी की प्रेरणा से सहस्रों शताब्दियों के आवर्तन में हिन्दुओं के जातीय चरित्र का विकास हुआ है। मैं गम्भीरतापूर्वक पूछता हूँ - कौन-सा मार्ग सरल है? लाखों वर्षों में विकसित राष्ट्रीय चरित्र का परित्याग अथवा सौ पचास वर्षों में अपनाई हुई विदेशी आदतों को त्याग देना? क्यों नहीं अंग्रेज अपने युद्धलोलुप स्वभाव को त्याग कर मार-काट बन्द कर देने और धर्म को अपने जीवन का अन्तिम लक्ष्य बनाने में सम्पूर्ण शक्तियां लगाकर ध्यानावस्थित हो जाते?

सच बात यह है कि जो नदी पर्वतों में अपने उद्गम स्थान से उतर कर सहस्रों कोस आगे चली आयी हो, क्या वह फिर अपने मूल स्रोत पर वापस जा सकेगी अथवा जा सकती है? यदि वह अपना प्रवाह उलटने का प्रयास करे तो परिणाम यही होगा कि उसका जल इधर-उधर बिखर कर सूख जाएगा। चाहे जैसे हो, नदी का देर-सबेर समुद्र में गिरना अनिवार्य है। चाहे उसे खुले और रमणीय मैदानों से गुजरना पड़े चाहे गन्दी और कठोर भूमि में से मार्ग निकालने के लिए संघर्ष करना पड़े। यदि इन दस हजार वर्षों का हमारा राष्ट्रीय जीवन एक भूल है तो भी कोई चारा नहीं। यदि हम अब कोई नया चरित्र अपनाने का प्रयास करेंगे तो उसका अपरिहार्य परिणाम होगा हमारी मृत्यु।

हमारी राष्ट्रीय चेतना के छिपे अग्निकण

मेरे मतानुसार हमारा यह सोचना कि 'हमारा राष्ट्रीय आदर्श एक भूल रही है' निरी मूर्खता और विवेक का अभाव मात्र है। पहले अन्य देशों में जाइए और अपनी आँखों से दूसरों की आँखों से नहीं - वहाँ की अवस्था तथा आचार-विचार का सूक्ष्म अध्ययन कीजिए। फिर विचारशील मस्तिष्क से यदि आपके पास है। तो- उन पर चिन्तन-मनन कीजिए। फिर अपने शास्त्रों के प्राचीन वाङ् मय को टटोलिए, सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कीजिए और खुली आंखों तथा सूक्ष्म एवं मर्मभेदी दृष्टि से उसके विभिन्न भागों के निवासियों के आचार-विचार तथा आदतों का निरीक्षण कीजिए। तब आपको मध्याह्नकालीन सूर्य के समान स्पष्ट हो जायगा कि इस राष्ट्र का जीवन अभी अक्षुण्ण है, उसकी नाड़ियों में प्राणों का स्पन्दन निश्चित रूप से विद्यमान है।

तब आपको पता चलेगा कि इस बाह्य मूर्च्छा की राख के नीचे राष्ट्रीय चेतना की ज्वाला अभी भी सुलग रही है। राष्ट्र का प्राण धर्म है, इसकी भाषा धर्म है, तथा इसका भाव धर्म है। आपकी राजनीति, समाज नीति, नगरों की सफाई, प्लेग-निवारण कार्य, अकाल पीड़ित सहायता कार्य आदि सब चीजें आज तक जिस ढंग से यहाँ होती आयी हैं, उसी मार्ग से अब भी होंगी। अर्थात्, केवल धर्म के माध्यम से होंगी, अन्यथा तुम्हारी चीख-पुकार का कोई परिणाम नहीं निकलेगा।

राष्ट्रीय जीवन-संगीत के विभिन्न स्वर

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग कार्यप्रणाली होती है। कुछ राजनीति के माध्यम से कार्य करते हैं तो कुछ सामाजिक सुधारों के माध्यम से और अन्य इससे भी भिन्न मार्गों से। हमारे लिये धर्म का ही एकमेव मार्ग खुला है। अंग्रेज धर्म को राजनीति के माध्यम से ही समझ सकता है। संभवतः अमेरिकन को धर्म सामाजिक सुधारों के माध्यम से ही समझ में आ सकता है। किन्तु हिन्दू को राजनीति भी धर्म की भाषा में समझानी होगी। उसके लिये प्रत्येक चीज धर्म के माध्यम से आनी चाहिये। यही हमारे राष्ट्रीय जीवन संगीत का स्थायी स्वर है, अन्य सब स्वर परिवर्तनशील हैं।

जिस राष्ट्र का जीवन लक्ष्य राजनीतिक प्रभुता है, उसके लिये धर्म आदि अन्य तब चीजें उस एक महान् जीवन लक्ष्य के आधीन हो जाती हैं किन्तु यहाँ एक दूसरा राष्ट्र है जिसके जीवन का मुख्य लक्ष्य आध्यात्मिकता और त्याग है, जिसका एक ही मूल मन्त्र है कि यह संसार माया है और तीन दिनों का क्षणभंगुर खेल है। अन्य सब कुछ चाहे विज्ञान हो या ज्ञान, सुखोपभोग हो या प्रभुता, धन-वैभव हो या नाम और यश-उस एक लक्ष्य के अन्तर्गत आने चाहिए। सच्चे हिन्दू के चरित्र का रहस्य इसी में है कि वह पाश्चात्य विज्ञान एवं विद्याओं के अपने समस्त ज्ञान को, अपनी सम्पत्ति व धन-वैभव को, अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा तथा यश को इस एक मुख्य लक्ष्य के ही अधीन कर दे जो प्रत्येक हिन्दू-शिशु को प्राप्त होता है-अर्थात् जन्म से आध्यात्मिकता एवं जातीय शुद्धता।

आध्यात्मिकता का आधार न छोड़ो

स्मरण रखो, यदि तुम पाश्चात्य भौतिकवादी संपदा के चक्कर में पड़कर आध्यात्मिकता का आधार त्याग दोगे तो उसका परिणाम होगा कि तीन पीढ़ियों में तुम्हारा जातीय अस्तित्व मिट जाएगा क्योंकि राष्ट्र का मेरुदण्ड टूट जाएगा, राष्ट्रीय भवन की नींव ही खिसक जाएगी। इस सबका परिणाम होगा सर्वतोमुखी सत्यानाश।

अतः मित्रो! एक ही मार्ग शेष है कि हम अपने प्राचीन पूर्वजों से चली आयी इस अमूल्य विरासत आध्यात्मिकता की पकड़ को कदापि ढीला न होने दें। क्या तुमने संसार में कोई ऐसा देश सुना है जहाके महातम राजाओं ने अपनी वंश-परम्परा का स्रोत राजाओं से नहीं, निरीह यात्रियों को लूटने वाले, पुराने किलों में रहने वाले लुटेरों सरदारों से नहीं तो वनों में रहने वाले अर्द्ध-नग्न सन्यासियों से जोड़ा हो! क्या तुमने कभी ऐसा देश सुना है ? तो सुनो! यही है वह देश। अन्य देशों के बड़े पादरी, पुरोहित भी अपनी वंश-परम्परा को किसी राजा से जोड़ने का प्रयास करते हैं, किन्तु यहा बड़े से बड़ा सम्राट भी अपने को किसी प्राचीन ऋषि का वंशज कहने में गौरव मानता है।

इसलिए चाहे तुम्हारी आध्यात्मिकता में आस्था हो या न हो, राष्ट्रीय जीवन की रक्षा हेतु तुम्हें आध्यात्मिकता के आधार पर टिके रहना होगा। फिर दूसरा हाथ बढ़ा कर अन्य जातियों से जो कुछ लेना चाहो लो, किन्तु जो भी उनसे ग्रहण करो उसे अपने जीवन आदर्श के अधीन कर दो। तब एक चमत्कारी गौरवशाली भावी भारत का उदय होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह होकर रहेगा! पहले से कहीं अधिक महान् भारत का उदय अवश्यम्भावी है।

(यह लेख श्री अरविंद की पुस्तक "The Foundations Of Indian Culture" से लिया गया है।)